Lecture No. 2

Name of the college - APSM College Barauni, Begusarai
Name — Dr. Shanti Kumari (G.T)
Deptt - — AIH&C

Lession/plan — B.A, AIH&C (H), part. 1, paper 1

Name of the Topic - Mauryakalin Economic Status.

Date - 16-04-2021

मौर्यकालीन आर्थिक अवस्था :—

Ⓐ उद्योग-धन्धे

Ⓑ सिक्के एवं विनिमय के साधन

प्राचीन काल से ही भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है, और यहाँ कृषकों की संख्या हमेशा अधिक रही है। कृषक अपना सारा समय खेती में लगाते थे। कृषक समाज पवित्र और अवध्य माना जाता था। युद्ध के समय भी कृषक निर्विघ्न रूप से अपना काम करते थे। ये लोग जनता की भलाई करनेवाले समझे जाते थे। किसान देहातों में रहते थे। कृषि के लिए सिंचाई की व्यवस्था थी। मेगास्थनीज लिखता है — "भारतवर्ष में अकाल कभी नहीं पड़ा है। और खाद्य वस्तुओं की महँगाई भी साधारणतया कभी नहीं हुई है।" खेती हल बैल से होती थी। अर्थशास्त्र में सिंचाई के अनेक साधनों का उल्लेख है। इसे सेतुबंध कहा गया है। सौराष्ट्र की सुदर्शन झील इसी सेतुबंध का एक उदाहरण थी। राजकीय कृषि भूमि पर दास, कर्मकार और कैदियों द्वारा काम कराया जाता था। भूमि की उपजाऊ का ह्रास बना रहता था। इसके लिए जनता को दार्शनिक लोग ही आगाह कर दिया करते थे। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से उत्पन्न परिस्थितियों का सामना करने के लिए बड़े-बड़े अन्नागार बनाये जाते थे। संकट काल में राज्य की ओर से नागरिकों को बीज तथा भोजन से सहायता की जाती थी। जंगली जानवरों से भी रोक से अथवा जंगली

P.T.O.

जानवरों से भी खेती कराई जाती थी। खेतीहारों के लिए औजारों का निर्माण शिल्पकार करते थे, जो केवल करों से मुक्त नहीं थे; प्रत्युत राजकोष से सहायता भी पाते थे। इन सुविधाओं के कारण बदले में उन्हें राज्य के निश्चित कार्य करने पड़ते थे। भूमि पर व्यक्तिगत अधिकार के भी प्रमाण मिलते हैं। कौटिल्य ने कास्तकार और भूस्वामी के बीच स्पष्ट भेद दिखाया है। जिस भूमि का स्वामी नहीं था, वह राजा की भूमि होती है।

(A) उद्योग धन्धे :— मौर्यकाल में कपड़े का व्यवसाय बड़ी उन्नत अवस्था में था। सूती कपड़े के व्यवसाय के लिए काशी, वत्स अपरान्त, बंग और मदुरा विशेष रूप से प्रख्यात थे। इन केन्द्रों में कपड़े तैयार करने के कारखाने थे। सन का प्रयोग भी कपड़ा बनाने में किया जाता था। मगध पुंड्र सुवर्णकुड्य देशों के विविध वृक्षों के पत्तों तथा छाल के रेशों से भी कपड़े बनाये जाते थे। ऊनी कपड़े का निर्माण (वर्णन भी) अर्थशास्त्र में है। मेगास्थनीज भी बहुमूल्य कपड़ों का उल्लेख करता है। कौटिल्य ने चिनपट्ट का भी उल्लेख किया है, पाटलीपुत्र नगरपालिका की एक विशेष समिति राजधानी में बनी वस्तुओं की देखभाल करती थी। अनाथ स्त्रियाँ बुनाई का काम करती थी।

राजनीतिक एकता एवं शक्तिशाली केन्द्रीय शक्ति के नियंत्रण में शिल्पों को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला प्रशासनिक सुधार के साथ व्यापार की सुविधायें और व्यापार का पोषण करने वाले शिल्पों ने छोटे-छोटे उद्योगों का रूप धारण कर लिया। सरकारी शिल्पियों के अतिरिक्त अनेक स्वतंत्र शिल्पी भी थे। ये श्रेणियों में विभक्त थे (संगठित) जिनको उनके वेतन और अधिकार सुरक्षित रहते थे। शिल्पियों को मेगास्थनीज ने चौथी जाति में रखा है। इसके अतिरिक्त उसने जहाज बनाने वाले, कवच और आयुधों के निर्माण करनेवाले, तथा खेती के लिए अनेक प्रकार के औजार बनानेवालों का भी उल्लेख किया है। ऊन, रेशे, कपास, शण-क्षौम और रेशम का काफी प्रचार था। काशी, बंग, पुंड्र, कलिंग मालवा आदि सूती वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध थे। बंग का मलमल विश्वप्रसिद्ध था। भारी कमर्शी ...

Scanned with CamScanner